



'एक वर्तुल' गढ़वाल केवल 'वर्तुल' बैठके करेगा। यह औपचारिकताओं के लिए ऐसा करेगा। इसके नेताओं का दोस्तीय एजडा अपने परिवारों और संपत्ति को बचाना है।

जे. पी. नड़ा

सिर्फ सच



kanwhizztimes



@kanwhizztimes  
lucknow



@kanwhizztimes

[www.kanwhizztimes.com](http://www.kanwhizztimes.com)

# कैनविज टाइम्स

वर्ष-11 अंक-340 रविवार, 14 जनवरी 2024 नगर संस्करण लखनऊ से प्रकाशित पवर दिल्ली, पंजाब और उत्तराखण्ड में प्रसारित मूल्य- ₹ 3.00 पृष्ठ-12

इंडिया गढ़बंधन की बैठक के बाद मिले रवैजगे-रहुल-केजरीवाल

11 राज्य में जन सहमानिता से स्वच्छता अभियान व्यापक स्तर पर चलाएँ : धार्मी 12

## संक्षेप

एचपीवी टीकाकरण पर कोई निर्णय नहीं

नयी दिल्ली। केंद्रीय रसायन एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने शनिवार को कहा कि एचपीवी टीकाकरण शुरू करने का अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया गया है। मंत्रालय ने यहां बताया कि 14 वर्ष आयु वर्ग की लड़कियों के लिए एचपीवी टीकाकरण अभियान शुरू करने संबंधित समावार गतल और असत्य हैं और ये पूरी तरह से अटकलें हैं। कुछ मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि केंद्र सरकार 9-14 वर्ष आयु वर्ग की लड़कियों को वर्ष 2024 की दूसरी महीने में मानव पैलोप्रोतेक्सर्स (एचपीवी) टीकाकरण अभियान शुरू करेगी। केंद्रीय रसायन एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने अभी तक देश में एचपीवी टीकाकरण शुरू करने पर निर्णय नहीं लिया गया है। यह देश में सर्वोडालन केरकर के मामलों की बारीकी से नियांवारी कर रहा है और इस संबंध में खोजें और विभिन्न रसायन विभागों के साथ नियन्त्रित संपर्क में है।

**शास्त्रीय गायिका प्रभा अत्रे का निधन**

मुंबई। प्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका प्रभा अत्रे का शनिवार को महाराष्ट्र में पूर्ण के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। वह 91 वर्ष की थी। उनके परिवारकर सूत्रों ने बताया कि सांस लेने में दिक्कत के कारण उन्हें अज सुबह एक निजी अस्पताल ले जाते समय दिल का दौरा पड़ा और उनकी मौत हो गयी। सुश्री अत्रे को 1990 में पदमश्री, 2002 में पदम भूषण और 2022 में पदम भूषण पुरस्कार से समानित किया गया था। इसके साथ ही उन्हें कई अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मान से नवाजा गया था। उनकी खाली, माझी, गजल, भजन नाट्यसंगीत और वादीकी की प्रस्तुति उत्कृष्ट रही। उन्होंने संगीत रचना, 'स्वरगिनी' और 'स्वरंजनी' पुस्तकें भी लिखी हैं। उन्हें 'अपूर्वी कल्याण', 'मधूर कौन्स', 'दबारी कौन्स', 'पटीपं-महार', शिव काली, 'तिलंग-भेरव', और 'रवि भेरव' जैसे नये रागों की खोज का श्रेय दिया जाता है।

**नड़ा राजनाथ, शाह को राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा का न्यौता**

नयी दिल्ली। भारत ने पाकिस्तान में नियुक्त बिटेन के उच्चायुक्त की पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर क्षेत्र के दौरे पर आपति दर्ज करायी है और इसे भारत की संप्रभुता और अखेंडता का उल्लंघन करें दुष्ट कहा है कि इस तरह का उल्लंघन नहीं किया जा सकता है।

विदेश मंत्रालय ने शनिवार को जारी एक बयान में कहा है कि बिटेन के राजनीतिक का 10 जनवरी का यह दौरा भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखेंडता का उल्लंघन है। मंत्रालय ने कहा है कि इस तरह का उल्लंघन स्वीकार्य नहीं है। उल्लंघनीय है कि इसामानवाद स्थिति बिटेन की उच्चायुक्त जेन वैरिट 10 जनवरी को जम्मू-कश्मीर के पाकिस्तान के कब्जे वाले इलाके में मीरांगर शहर में गयी थीं और उन्होंने एम यात्रा में पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर

## महिलाओं का स्वावलंबन और सम्मान सरकार की प्राथमिकता : मुख्यमंत्री

1150 महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए मुफ्त सिलाई मशीनों का वितरण

कैनविज टाइम्स संचादकता



गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में आयी आवादी की सुरक्षा, स्वावलंबन और सम्मान सरकार की शीर्ष प्राथमिकता है। महिलाओं को सुरक्षा का वातावरण देकर उनके स्वावलंबन और सम्मान के लिए केंद्र व प्रदेश सरकार की तफ से अनेक योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया है।

इनके सकारात्मक परिणाम भी सामने आ रहे हैं। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए ही पीम मोदी के निरी वंदन अधिनियम पारित कराकर संसद और विधानसभा में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण सुनिश्चित कराया है।

सीएम योगी शनिवार को महाराष्ट्र प्रताप शिक्षा प्रशिक्षण के बैनर तले आयोजित मुफ्त सिलाई मशीन वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। महाराष्ट्र प्रताप ईंटर कॉलेज के मैदान में हुए समारोह में 1150 महिलाओं और बालिकाओं को सांसारिक भूतों ने बाजार के कार्रवाच के लिए सिलाई मशीनों का वितरण किया गया।

साथ में सबकों कंबल भी दिया गया। 12 बालिकाओं को सिलाई मशीन व कंबल सीएम योगी ने खुद अपने हाथों से प्रदान किए। उन्नत भारत ग्राम अभियान के मिशन शक्ति के अंतर्गत महिलाओं और बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सिलाई मशीनों का वितरण किया गया।

12 बालिकाओं को सिलाई मशीन व कंबल सीएम योगी ने खुद अपने हाथों से प्रदान किए। उन्नत भारत ग्राम अभियान के मिशन शक्ति के अंतर्गत महिलाओं और बालिकाओं को जेके गुप्त कानपुर के सरदार इन तीनों पहल करने पर प्रधानमंत्री को घुस पाए रहे। यह एक अभिनव प्रशासनीक घटना है।

सीएम योगी ने कहा कि पूर्व की सरकारों में नियन्त्रित महिलाओं को मालिने वर्ती तरीके से बेटी के जन्म से लेकर स्तनक की पद्धाई तक 15 हजार रुपये की धनराशि दी जाती है। इस विनीती वर्ष से इस सरकार के बदाकर 25 हजार रुपये किया जाएगा। गरीब बेटियों को सारी के लिए भी सरकार 51 हजार रुपये उपलब्ध करायी है।

सीएम योगी ने कहा कि पूर्व की सरकारों में नियन्त्रित महिलाओं को मालिने वाली 300 रुपये की पेंशन राशि को एक हजार रुपये कर इस सरकार ने एक करोड़ नियन्त्रित महिलाओं, बृद्धजनों और दिव्यांगों को लाभान्वित किया है। सरकार ने

22 के बाद सरकारों कराएंगे श्रीरामलला के दर्शन

मुख्यमंत्री ने कहा कि 22 जनवरी के बाद श्रीरामलला के भव्य दर्शन के साथ नए भारत के नए उत्तर प्रदेश की नई अयोध्या के दर्शन की विद्युत्पूर्ण है।

इसके लिए अनेक कदम उठाए हैं। यह महिला स्वावलंबन से बाजार के लिए एक अभिनव प्रशासन है। प्रशिक्षण के बाद सिलाई मशीन पर काम शुरू कर ये महिलाएं गोरखपुर के रोडीमेंड गारमेंट का हब बनाने में स्मृत्यु पुलिस की भारी-धरकम फोर्स को तैनात किया गया है। इसके साथ ही अयोध्या में महमानों की सुरक्षा के लिए वार कोडिंग का इस्तेमाल भी किया जा रहा है।

अयोध्या के अड्डों पर एचपीवी की आवादी के लिए एक अभिनव प्रशासन है। यह एक अधिसैनिक बलों के 11,000 जवान तैनात किये जाएंगे। वहां बीआईजी सुरक्षा के लिए एक तीन डीआईजी, 17 एसपी, 40 एसपी, 82 डीएसपी, 90 इंडेप्यूटर के साथ एक हजार से ज्यादा कॉर्टेबल और 4 कंपनी परिसी को तैनात किया गया है।

अयोध्या के अड्डों पर प्रशासन को मालिनीजी योगी आदित्यनाथ के लिए एक अभिनव प्रशासन है।

यह महिला स्वावलंबन से जुड़ा है। एक और फॉर्स को बढ़ाया जा रहा है। यहां बीआईजी सुरक्षा के लिए एक अभिनव प्रशासन है।

यह अभिनव प्रशासन को लाभान्वित किया जाएगा।

स्वामिलय योजना से ग्रामीण महिलाओं को धरों का मालिनान हब दिया है तो महिला स्वयं समूहों के जरिये भी महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए अनेक कदम उठाए हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 22 के बाद सरकार से स्वामिलय योजना के तहत आयोध्या में श्रीरामलला के भव्य दर्शन के साथ नए भारत के उत्तर प्रदेश की विद्युत्पूर्ण है।

इसके लिए अनेक कदम उठाए हैं। यह महिला स्वावलंबन से बाजार के लिए एक अभिनव प्रशासन है।

यह महिला स्वावलंबन से बाजार के लिए एक अभिनव प्रशासन है।

यह महिला स्वावलंबन से बाजार के लिए एक अभिनव प्रशासन है।

यह महिला स्वावलंबन से बाजार के लिए एक अभिनव प्रशासन है।

यह महिला स्वावलंबन से बाजार के लिए एक अभिनव प्रशासन है।

यह महिला स्वावलंबन से बाजार के लिए एक अभिनव प्रशासन है।

यह महिला स्वावलंबन से बाजार के लिए एक अभिनव प्रशासन है।

यह महिला स्वावलंबन से बाजार के लिए एक अभिनव प्रशासन है।

यह महिला स्वावलंबन से बाजार के लिए एक अभिनव प्रशासन है।













# राजनीतिक अपरिपक्वता

रामललता का प्राण प्रताष्ठा समाराह में काग्रस नता सानाया गाधा, माल्लकाजुन खरगे और अधीर रंजन चौधरी एवं इंडिया गठबंधन के अन्य दलों ने शामिल नहीं

हाने का निर्णय लेकर जहां अपनी राजनीतिक अपरिवक्तव्य का परिचय दिया है, वहाँ भारत के असंख्य लोगों की आस्था एवं विश्वास को भी किनारे करते हुए आराध्य देव भगवान् श्रीराम को राजनीतिक रंग देने की कुचेष्ठा की है। भले ही यह भारतीय जनता पार्टी एवं गण्डीय स्वरांसेवक संघ के वर्चस्व का अनुष्ठान है, लेकिन लोकतांत्रिक मूल्यों को प्रतिष्ठा देते हुए कांग्रेस को ऐसे राजनीतिक निर्णय लेने से दूर रहते हुए समारोह में भाग लेना चाहिए था। राम मंदिर के निमंत्रण को तुकराना बेहद दुर्भाग्यरूप और आत्मघाती फैसला है। ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेस ने खुद अपनी जमीन को खोखला करने की ठान रखी है। विनाशकाले विपरीत बुद्धि! निश्चित ही कांग्रेस अब भारत की बहुसंख्यक जनता की भावनाओं को नकार रही है, वह राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक वास्तविकताओं और भावनाओं से पूरी तरह से कट गई है। इन दिनों कांग्रेस की ओर से लिए जा रहे हर फैसले भारत विरोधी शक्तियों को बल देने, कुछ वामपंथी चरमपंथियों को बढ़ावा देने, जातीयता एवं साम्प्रदायिकता की राजनीति को कायम रखने और शीर्ष पर बैठे नेताओं के आसपास के कुछ कट्टरपंथी अल्पसंख्यकों को खुश करने के लिए हैं। कांग्रेस ने पिछले कुछ दशकों में अयोध्या मंदिर के लिए काई सकारात्मक कदम नहीं उठाया जो भगवान् श्रीराम के अस्तित्व को नकार देने का ही घोटक है। राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल हिन्दुओं का ही नहीं बल्कि राष्ट्र का उत्सव है। साथ ही देश के सांस्कृतिक और आचार्यात्मक गौव का महा-अनुष्ठान है। बाबर से लेकर औरंगजेब तक सभी मुगल आक्रान्तों ने तलवार के बल पर हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन ही नहीं कराया बल्कि हिन्दु मन्दिरों एवं आस्था के केन्द्रों को ध्वस्त किया था। श्रीराम जन्मभूमि, श्रीकृष्ण जन्मभूमि और काशी विश्वानाथ थाम को भी नहीं छोड़ा गया और हजारों मंदिरों को ध्वस्त कर उनके स्थान पर मस्जिदें बनवा दीं गयीं। आजादी के बाद इस गौरवमय धार्मिक एवं सांस्कृतिक इतिहास को पुनर्निर्मित करने का काम होना चाहिए था लेकिन कांग्रेस शासन ने संकीर्ण एवं स्वार्थ की राजनीति के कारण ऐसा नहीं होने दिया। आज भाजपा अपनी गण्डीय अस्मिता एवं ऐतिहासिक भूलों को सुधारने काम कर रही है तो उसे राजनीतिक रंग देना मानसिक दिवालियापन एवं गण्डी-विरोधी सोच है। श्रीराम मंदिर राजनीति का विषय नहीं है बल्कि आस्था का विषय है। आस्था हर व्यक्ति की अस्मिता से जुड़ा प्रश्न है। राम लला साढ़े पांच सौ वर्षों से इसका इंतजार कर रहे थे। अब वह समय आ गया है, भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण हो चुका है और आगामी 22 जनवरी का दिन इतिहास के पन्नों में दर्ज होने वाला है। प्रधानमंत्री ने इस दिन राम लला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में उपस्थित रहेंगे। श्रीराम भारतीय समाज के आदर्श पुरुष रहे हैं, भारत की राजनीति के लिये वे प्रेरणास्रोत हैं, उन्हें केवल भाजपा या आरएसएस का बताने वाले भारत की जनआस्था से स्वयं को ही दूर कर रहे हैं, स्वयं को हिन्दु विरोधी एवं राम-विरोधी होने का आधार ही मजबूत किया है। अच्छा होता निमंत्रण तुकराने की बजाय इस समारोह में उपस्थित होकर श्रीराम के प्रति एवं असंख्य लोगों की आस्था का सम्मान करते। इस तरह एक जीवंत परम्परा को बूढ़लाने एवं तुकराने के निश्चित ही आत्मघाती दुष्प्रियाम होंगे। श्रीराम राज्य तब भी और आज भी राजनीति स्वार्थ से प्रेरित ना होकर प्रजा की भलाई के लिए है। जनता की भलाई एवं आस्था को न देखकर कांग्रेस पुरुषलम एवं ईसाई वोटों को प्रभावित करने के लिये तथाकथित ऐसा निर्णय लिया है, जो उसकी हिन्दू विरोध मानसिकता का घोटक है। कांग्रेस ने सदैव श्रीराम मंदिर आंदोलन से दूरी बनाकर रखी, मंदिर निर्माण की प्रक्रिया में रोड़े अटकाएं और जिसने सर्वोच्च न्यायालय में यह हलफनामा दिया हो कि श्रीराम का कोई अस्तित्व नहीं है, श्रीराम एक काल्पनिक पात्र हैं, उस कांग्रेस के नेताओं से यह अपेक्षा ही कैसे की जा सकती है कि वे श्रीराम मंदिर निर्माण के महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक प्रसंग में उत्साह, उमंग एवं आनंद के साथ शामिल होंगे? कांग्रेस के इस निर्णय से हिन्दू मन के कांग्रेसी नेता अवश्य ही अस्वर्यचकित एवं दुखी हैं। कांग्रेस के भीतर से ही कई नेताओं ने खुलकर यह कहने की हिम्मत दिखायी है कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम हमारे आस्था देव हैं इसलिए यह स्वाभाविक है कि भारतभर में अनगिनत लोगों की आस्था इस नवनिर्मित मंदिर से वर्षों से जुड़ी हुई है। कांग्रेस के कुछ लोगों को उस खास तरह के बयान से दूरी बनाए रखनी चाहिए और जनभावना का दिल से समान करना चाहिए।

## भारत के मन के धर्म मंत्र

भारत उत्सव प्रिय उल्लासधर्मा देश है। सतत कर्म यहां जीवन साधना है। पूरे वर्ष कर्म प्रधान जीवन और बीच-बीच में पर्व त्योहार और उत्सवों का आनंद। भारत के मन का मूल उत्सव सांस्कृतिक है। उत्सव का अर्थ है केन्द्र। उत्सव परिधि है। उत्सव उल्लासधर्म होते हैं। वे भारत के लोक को भीतर और बाहर तक आच्छादित करते हैं। मकर संक्रान्ति का उत्सव ऐसा ही है। यह भारत के सभी हिस्सों में मनाया जा रहा है। नदियों में कड़कों की ठंड के बावजूद स्नान ध्यान, पूजन और आनन्द। हम भारत के लोग उत्सवों में समर्वेत होते हैं, आनन्दित होते हैं। संप्रति मकर संक्रान्ति के अवसर पर ग्रामीण क्षेत्रों में भी आनन्द की लहर है।

भारतीय चित्तन में सूर्य ब्रह्मांड की आत्मा हैं। सूर्य सभी राशियों पर संचरण करते प्रतीत होते हैं। वसुतुः पृथ्वी ही सूर्य की परिक्रमा करती है। आर्य भट्ट ने आर्यभट्टीयम में लिखा है, “जिस तरह नाव में बैठा व्यक्ति नदी को चलता हुआ अनुभव करता है, उसी प्रकार पृथ्वी से सूर्य गतिशील दिखाई फड़ता है”। सूर्य धनु राशि के बाद मकर राशि पर होना उपासना के लिए सुन्दर मुहूर्त माना जाता है। वराहमिहिर ने बृहत संहिता में बताया है, ‘‘मकर राशि के आदि से उत्तराह उमंग एवं आनंद के साथ शामिल होंगे? कांग्रेस के इस निर्णय से हिन्दू मन के कांग्रेसी नेता अवश्य ही अस्वर्यचकित एवं दुखी हैं। कांग्रेस के भीतर से ही कई नेताओं ने खुलकर यह कहने की हिम्मत दिखायी है कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम हमारे आस्था देव हैं इसलिए यह स्वाभाविक है कि भारतभर में अनगिनत लोगों की आस्था इस नवनिर्मित मंदिर से वर्षों से जुड़ी हुई है। कांग्रेस के कुछ लोगों को उस खास तरह के बयान से दूरी बनाए रखनी चाहिए और जनभावना का दिल से समान करना चाहिए।

## मकर संक्रान्ति पर तिल से पूजा भी करें और तिल खाएं भी, होगा बड़ा लाभ

द्यू धर्म का एक विशेष पर्व माने जाने वाले मकर संक्रान्ति के अवसर पर लोग सिर्फ पूजा-पाठ, स्नान या दान ही नहीं करते। बल्कि इस दिन तिल के अतिरिक्त चावल, उड़द की दाल, मूँगफली या गुड़ आदि का भी सेवन किया जाता है परंतु तिल का एक अलग ही महत्व है। लोग अन्य कोई चीज खाएं या न खाएं, लेकिन तिल को किसी न किसी रूप में शामिल अवश्य करते हैं। मकर संक्रान्ति के दिन तिल की महत्वा का अंदराजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस पर्व को “तिल संक्रान्ति” के नाम से भी पुकारा जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि वास्तव में इस दिन तिल को इतना महत्व क्यों दिया जाता है। नहीं न, तो चलिए आज हम आपको इस बारे में बताते हैं? मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य देव मकर राशि में प्रवेश करते हैं, इसलिए इस पर्व को मकर संक्रान्ति कहकर पुकारा जाता है और मकर के स्वामी शनि देव हैं। सूर्य और शनि देव भले ही पिता? पुत्र हैं लेकिन फिर भी वे आपस में बैर भाव रखते हैं। ऐसे में जब सूर्य देव शनि के घर प्रवेश करते हैं तो तिल की उपस्थिति के कारण शनि उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं देते। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि तिल शनि प्रिय वस्तु है। शनि व्यक्ति के पूर्व जन्म के पायों का प्रायश्चित्त करवाते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस दिन अगर तिल का दान व उसका सेवन किया जाए तो इससे शनि देव प्रसन्न होते हैं और उनका कुप्रभाव कम होता है। जो लोग इस दिन तिल का सेवन व दान करते हैं, उनका राहु व शनि दोष निवारण बेहद आसानी से हो जाता है।

# सामाजिक-परिवारिक मूल्यों के रखवाले हैं श्रीराम

प्रेर संज्ञान की सीमाएं हैं। उन्हें चिह्नित करना बहुत दूर की कौड़ी है। भारतीय समाज में श्रीराम उस वट वृक्ष की तरह हैं जिसकी छत्राचाया में भक्त, लोचक, आम, खास, आराधक, विरोधी, संबोधक सबके सब न जाने दिलते सालों से एक साथ चले आ रहे हैं। 'श्रीराम' भारतीय चिंतन परम्परा का बसे चहेता चेहरा है। उनमें निर्णयों व सुगुणों सब ही का समान हिस्सा है। ब्रह्मवादी उनमें ब्रह्मस्वरूप देखते हैं। निर्गुणवादियों के लिए आत्मा ही श्रीराम है। अवतारवादियों के लिए अवतार हैं। वैदिक साहित्य में उनका विचित्र रूप है। दृढ़ कथाएं उनके करुणा रूप से कसी हुई हैं। वाल्मीकि के श्रीराम कितने रपेख हैं देखते ही बनता है। तुलसी के श्रीराम भारतीय जननामनस में बसे राम हैं, यहां सबके घट-घट में सजे श्रीराम हैं। श्रीराम ही हैं, जो भारत को न तर से दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक एक सूत्र में पिराए हुए हैं। भारतीय समाज के लिए तो मान-सम्मान का सम्बोधन ही 'राम-राम' हो जाता है। यह अकारण नहीं है जो सब कुछ राममय हो गया है। यहां हर घर का बड़ा दारा राम हो जाता है जो आजाकरी है, त्यागी है, सेवाभाव वाला है। आदर्श सक्सक सबको राम सरीखा नजर आता है। यहां तक कि रामराज्य आदर्श वस्थआओं के आग्रह का आवश्यक आधार बन जाता है।

श्रीराम भारतीय परम्परा का अभिन्न हिस्सा हैं। तुलसी के श्रीराम मर्यादा छोत्तम हैं और वाल्मीकि के राम मानवीय भावनाओं से ओत-प्रोत संतलित हैं।

मर्यादा हैं। यार यार-नाम के रूप में जीवन यार-जागा रखा प्रत्यक्षतुरुद्धरण है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने अपने जीवन में एक-एक मर्यादा की पालनापालने के लिए व्यापक उपाय लिए हैं। यहाँ समाज के सम्मुख आदर्श रखे। पुत्र, पिता, भाई, पति, राजा, मित्र तमाम पुरुषों में मानवीय भावनाओं के संतुलक राम सिफ़ी भारत के ही आदर्श नहीं हैं। बल्कि पूरे विश्व के लिए आदर्श रूप में अनुकरणीय हैं। प्रभु श्रीराम की जीवन आम जीवन से जुड़ा जीवन है, वह सबको चमत्कृत नहीं अपितु उत्कर्षित करता है। पती के अपहरण पर भी समाज से सहयोग मांगा और उपर्युक्त किया। तो उसे वापस पाने के लिए मिल-बैठकर नीति बनाई। लंका जाने के लिए एक-एक पत्थर जोड़कर पुल बनाया। एक कुशल प्रबन्धक की तरह लौटे तो पूरी सेना के साथ लौटे, एक साप्राज्य निर्माण की आकंक्षा से लबरेज लिया। राम अगम है सगुण हैं निर्गुण है। कहत कबीर निर्गुण राम जपहु रे भाई॥'

जनमानस पर इतना गहरा प्रभाव तब ही संभव हो भी पाया। श्रीराम से अर्थात् भारतीय समाज संदैव सार्थकता पाता रहा है। भारत का आम जन-जीवन युगों-युगों से राम के दृष्टिकोण के साथ जीवन के संदर्भों-स्थितियों-परिस्थितियों-परिस्थितियों-घटनाओं और प्रघटनाओं को मूल्यांकित करता रहा है। श्रीराम भारतीय समाज की वैचारिक थाती हैं। श्रीराम भारतीय संस्कृति की सतत वाहमान धारा है। उनके उग्र स्वरूप के चित्रण में वैसा प्रभाव नहीं है जैसा कि उनकी सौम्यता में समाया हुआ है। राम बहुत सहज, सौम्य और सम्मोहक हैं। उनकी लिए वह सर्वत्र हैं। सबके हैं और सब उनके हैं। रहीम खान-ए-खाना हते हैं कि 'रामचरित मानस हिन्दुओं के लिए ही नहीं मुस्लिमों के लिए भी उनकी परदश है। तभी उहोंने लिखा- 'रामचरित मानस विमल, संतन जीवन प्रान, न्तु अन को वेद सम, तुरकहि प्रगट कुरान।'

मौदुर्दीन नागारी, खाजा मोइनुद्दीन चिर्ती आदि सब ने राम की काव्य-पूजा  
तो किसी ने राम की शक्ति-पूजा की है। तुलसी, कबीर, नानक और रैदास  
ब राम में स्मृत है। तुलसी कहत 'राम न सकहि नाम गुन गाहीं।' अर्थात् स्वयं  
'राम' भी इतने समर्प नहीं है कि वह अपने ही नाम के प्रभाव का गान कर  
के। कबीर कहते हैं-'राम गुण न्यारो न्यारो। अबुझा लोग कहांलों बूझे,  
झनहार विचारो।'

यन्नारथण दीक्षित  
अंत में सूर्य सविता देव का स्मरण करते हैं,  
सविता-सविता हमारे पीछे हैं।“ फिर कहते  
तोतर सविता धरातात्-सविता सामने हैं। ऊपर  
विता हमें सुख व समृद्धि दें। दीर्घायु भी दें।“  
उपरित्थि दशों दिशाओं में है। यही तेजोमय  
पर हैं। उनके अभिनन्दन की सुन्दर मुहूर्त है  
युण्यदायी नदियों में स्नान की भी परंपरा है।  
चरितमानस में मकर संक्रान्ति के अवसर के  
शब्द चित्र बनाया है, “माघ मकरगत रवि जब  
आव सब कोई।“  
नाकाल मेरे लेकर उपनिषदों मदाकाल्यों और  
में सूर्यदेव के तीन भाइयों में वे स्वयं, दू  
अनि। सूर्य के रथ का  
रथ में सात घोड़े हैं। सा  
आगे सात शब्द का दोहे  
में सविता सूर्य की स्तुति  
में सात रंग हैं। ध्वनि  
ऋषि जिज्ञासा है, “इस  
को किसने देखा? जो  
पोषण करते हैं।“ पूर्व  
जानना चाहते हैं, “यह  
हैं।“ ऋषि जानकारी के  
जानना चाहता है। समीक्षा

नाकाल से लकर उपनिषद्, महाकाव्या आ॒  
लूक साहित्य में सूर्योदेव की चर्चा है।  
(4-5) में कहते हैं कि, “आदित्य ह्री प्राण हैं। द्वा॑  
में में कहते हैं, जैसे मनुष्यों में प्राण महत्वपूर्ण हैं  
में सूर्य हैं।” सूर्य के कारण इस पृथ्वी ग्रह पर  
है। सूर्य दिव्य है। तेजोमय दिव्यता है। सूर्य ऊँचा  
आश्चर्य भण्डार है। प्रत्येक ताप का ईंधन होता  
यथ सूर्य ताप के पीछे भी कोई कारण/ईंधन होना  
अस्त्रों वर्ष से तप रहे हैं। हम सब सूर्य परिवार  
के प्रथम मण्डल (सूक्त 164) के प्रथम मंत्र

लोकपाल हैं, सबके प्रेरक हैं और समाज के सह-निर्माता हैं। राम के आदर्शों का जनमानस पर इतना गहरा प्रभाव तब ही संभव हो भी पाया। श्रीराम से भारतीय समाज सदैव सार्थकता पाता रहा है। भारत का आम जन-जीवन युगों-युगों से राम के दृष्टिकोण के साथ जीवन के संदर्भों-स्थितियों-परिस्थितियों-मनःस्थितियों-घटनाओं और प्रघटनाओं को मूल्यांकित करता रहा है। श्रीराम भारतीय समाज की वैचारिक थारी हैं। श्रीराम भारतीय संस्कृति की सतत प्रवाहमान धारा हैं। उनके उग्र स्वरूप के वित्रण में वैसा प्रभाव नहीं है जैसा उनकी सौम्यता में समाया हुआ है। राम बहुत सहज, सौम्य और सम्मोहक हैं। इसलिए वह सर्वत्र हैं। सबके हैं और सब उनके हैं। रहीम खान-ए-खाना कहते हैं कि 'रामचरित मानस हिन्दुओं के लिए ही नहीं मुस्लिमों के लिए भी आदर्श है। तभी उहोंने लिखा- 'रामचरित मानस विमल, संतन जीवन प्रान, हिन्दुअन को वेद सम, तुरकहिं प्रगट कुरान'

जनवरी, 1921 को आज से लगभग एक सदी पूर्व 'यांग इंडिया' में उहाँने लिखा, 'मेरे लिए राम, अल्लाह और गॉड सब एक ही हैं।' इसी चिंतनधारा में संत विनोबा भावे जी राम, कृष्ण, बुद्ध को अवतार घोषित किए जाने के प्रश्न पर कहते हैं 'दरअसल विचार का ही अवतार होता है। लोग समझते हैं कि राम, कृष्ण, बुद्ध, अवतार थे। हमने उहें अवतार बनाया है। अवतार व्यक्तिका का नहीं विचार का होता है और विचार के बाहन के तौर पर मनुष्य काम करते हैं। युगानुकूल वैचारिकी खड़ी करते हैं। किसी युग में राम के रूप में सत्त्व की महिमा प्रकट हुई तो किसी में कृष्ण के रूप में प्रेम की, तो कभी बुद्ध के रूप में करुणा की।' भारत की हर एक भाषा में रामकथाएं कही गई हैं। भारत के बाहर फिलीपाईन्स, थाईलैंड, लाओस, मंगोलिया, साइबेरिया, मलयेशिया, प्यांगार, स्थाम, इंडोनेशिया, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, चीन, जापान, श्रीलंका वियतनाम सभी में रामकथा के ढेरों स्वरूप मौजूद हैं। इससे स्पष्ट है कि यहिं प्रारंभ केवल राजा होते, न्यायी होते, सदाचारी होते, धर्म प्रवर्कक होते तो सायद उनकी स्मृति भी कब की क्षीण हो चुकी होती और वह इतिहास बनकर रह गया होते। श्रीराम इतिहास नहीं हैं वह तो हर पल नए निवर्तमान हैं। अपना को धर्म-पंथ न चलाते हुए भी धर्म का आदि और अंत हैं। स्थूल रूप में अपने समय में नर-लीला करते हुए भी अतीत नहीं हुए वर्तमान हैं।

यहीं वह सबसे माझूँ सवाल है जिसके जवाब में 'श्रीराम युगों-युगों तक भारत के भीतर प्राण संचार करने वाले जन-नायक रहे हैं।' श्रीराम का जीवन चरित्र संघर्ष में भी धीरज देता है। घोर नैराश्य में भी साहस और संयम सिखाता है श्रीराम एक आदर्श व्यक्तित्व के पूरक है। श्रीराम का पूरा जीवन ही संघर्षों और आदर्शों से लबालब है। श्रीराम एक आदर्श पुत्र, पति या भाई ही नहीं हैं अपि भारतीय समाज के लिए मर्यादा हैं। विनय और विवेक के विनायक हैं। लोकतांत्रिक मूल्यों और संयम के संवाहक श्रीराम हैं। एक मर्यादित, संयमित, और संस्करित जीवन की जीवनं ज्ञानं की हैं मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम। श्रीराम वर राज्य जन सेवा के लिए नीतिकुशल न्यायप्रिय राजा का है। पारिवारिक मूल्यों के लिए निष्ठावान पीढ़ी के संस्कार वाला जीवन श्रीराम का है। वैवाहिक आदर्शता की पराकृष्णा को परोसते श्रीराम ने पिता के तीन विवाहों के बातवरण में भी सीता सी सती के लिए वियोगी जीवन संघर्ष जारी रखा। यह श्रीराम हक्क कर सकते हैं। श्रीराम का यह पारिवारिक व्यवहारिक जीवन-दर्शन भारतीय समाज की रण-रण में रमता है। उनके आदर्श उत्तर से दक्षिण तक सम्पूर्ण भारतवर्ष के जनमानस में जमें हुए हैं। श्रीराम का तेजस्वी और पराक्रमी स्वरूप भारत राष्ट्र को रक्षित रखता है। असीम क्षमता और अपार शक्ति वाले श्रीराम संयमित और मर्यादित जीवन जीते हैं। सामाजिक, पारिवारिक, लोकतांत्रिक और आध्यात्मिक आह्वान के साथ लोक कल्याण में रत श्रीराम मानवीय करुणा वाले कर्मवीर हैं। तभी तो मानते हैं-'परहित सरिस धर्म नहीं भाई'

राममनोहर लोहिया कहते हैं गांधी ने भारत को संबोधित करने के लिए श्रीराम का ही सहारा लिया, यह अकारण नहीं है। दरअसल श्रीराम इस राष्ट्र की एकता के प्रवर्तक हैं। गांधी ने श्रीराम को माध्यम बना हिन्दुस्तान के सामने एक मर्यादित तत्वीय रखी, जोकि गांधी के राम-राज्य की परिकल्पना में लोकहित सर्वोंपरि हैं। भारत की हर नई पीढ़ी राम और रहीम की साझी परम्पराओं के सामाजिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक संदर्भ में समझती आयी है। श्रीराम की यह थारी हमारी अमूल्य निधि है और असल ताकत भी। हमारी सामाजिक-राजनीतिक परम्पराओं के समावेशी चरित्र व बनाने में श्रीराम की अद्वितीय भूमिका है। श्रीराम भारत के जन-जीवन में समाज हुए सर्वग्राही नायक हैं। हिन्दू श्रीराम को अपनी उस आध्यात्मिक शक्ति व प्रकाश-पुंज मानते हैं, जिसके सहारे वह हर क्षेत्र में राम-राज्य की स्थापना व्यावहारिक और अभिनव प्रयोग करते दिखते हैं। हर भारतवासी की श्रीराम रात्रि अगाध उद्धा है। श्रीराम भारतीय जीवन को शुरू से अंत तक अजस्र शक्तिपूर्ण स्रोत के रूप में ऊर्जित रखते हैं। श्रीराम उस ऊर्जा स्रोत की तरह भारतीय अस्तित्व में समाये हुए हैं, जो इस समाज को बार-बार संभालता है और लोकों कल्याण की दिशा में प्रेरित रखता है। यहां हर घर में श्रीराम रमण करते हैं। घट-घट में श्रीराम बसते हैं।

डॉ. राकेश राणा

जार में लाल-लाल गाजर  
ने लगती हैं। इन्हाँ ने गाजर की सब्जी से लेकर  
हैं। यूं तो गाजर को कई  
आप इससे मिलने वाले  
लिए जानते हैं गाजर से  
? गाजर में कई तरह के  
हैं। खासतौर से इसमें  
सी, विटामिन बी 1, कई  
स्ट्रीडेंट्स पाए जाते हैं।  
ष रुप से लाभदायी माना  
रेटिन व विटामिन ए की  
गाजर का सेवन पर्याप्त  
रोशनी लंबे समय तक  
धीर्थी व मांत्रियर्बद जैसी  
हो जाती है। समय के  
के लिए संभव न हो  
हने के लिए कुछ उपाय  
एक है गाजर का सेवन  
करना। दरअसल, इसमें बीटा?कैरोटीन  
एंटी?ऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। जो विभिन्न कोशिकाओं का  
मरम्मत करते हैं और एरिंगा के साइन्स को लावे समय तक  
आने से रोकते हैं। इन्हाँ ही नहीं, गाजर का सेवन रुख  
त्वचा, पिंपल्स, पिगमेंटेशन आदि समस्या से भी निजा  
दिलाते हैं। गाजर हृदय के लिए भी बेहद फायदेमंद होती है।  
दरअसल, इसमें कैरोटीनॉयड्स पाए जाते हैं जो किसी भी  
तरह के हृदय रोग की आशंका को कम करते हैं। इसके  
अतिरिक्त इसमें बीटा?कैरोटीन के साथ?साथ अल्प  
कैरोटीन और ल्यूटिन भी पाया जाता है। गाजर का नियमित  
सेवन कोलोस्ट्रॉल लेवल को भी नियंत्रित करने में मदद करता है।  
गाजर और खाद्य कणों को मुँह से निकालकर दांत  
व पूरे मुँह की सफाई करने का काम करता है। ठीक उस  
तरह, जिस प्रकार एक टूथब्रश व टूथपोस्ट अपना काम करता है।  
गाजर में पाए जाने वाले मिनरल्स दांतों को किसी भी तरा  
की क्षति से बचाते हैं। इसके अतिरिक्त गाजर मसूदों  
को उत्तेजित करके अधिक लार उत्पन्न करने में मदद करता है।  
और यह लार क्षारीय होने के कारण कैविटी बनाने वाली  
बैक्टीरिया को संतुलित करके दांतों की रक्षा करता है।

कामना करते हैं। अंत में सूर्य सविता देव का स्मरण करते हैं, “सविता पश्चातात् सविता-सविता हमारे पीछे हैं।” फिर कहते हैं: “परस्तात् सवितोत् सविता धरातात्-सविता सामने हैं। ऊपर

ये सविता हमें सुख व समृद्धि दें। दीघ की उपस्थिति दशों दिशाओं में है। य

व्रता मकर राशि पर है। उनके आधारन्दन को सुन्दर मुहूर्त है और संक्रान्ति। पुण्यदायी नदियों में स्नान की भी परंपरा है। ग्रीष्मीयासन ने रामचरितमानस में मकर संक्रान्ति के अवसर के दौरान प्रयागराज का शब्द चित्र बनाया है, “माघ मकरग्रात रवि जब तीरथपतिहि आव सब कोई॥”

ऋग्वेद के रचनाकाल से लेकर उपनिषदों, महाकाव्यों और वर्ती संस्कृतिपूलक सहित्य में सूर्योदेव की चर्चा है।

ोनपिण्ड (१-५) में कहते हैं कि, “आदित्य ही प्राण हैं इन दोयुग उपनिषद में कहते हैं, जैसे मनुष्यों में प्राण महत्वपूर्ण हैं वही ब्रह्माण्ड में सूर्य हैं।” सूर्य के कारण इस पृथ्वी ग्रह पर अच्छ का जीवन है। सूर्य दिव्य हैं। तेजोमय दिव्यता हैं। सूर्य ऊपर नीर व प्रकाश का अक्षय भण्डार हैं। प्रत्येक ताप का ईंधन होता हीसी तरह तेजोमय सूर्य ताप के पीछे भी कोई कारण/ईंधन होना नहीं। सूर्यदेव अरबों वर्ष से ताप रहे हैं। हम सब सूर्य परिवार अंग हैं। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल (सूक्त 164) के प्रथम मंत्र

शामिल, फ़ि

**स** दी का मौसम आते ही बाजार में लाल-लाल गाजर बेहद सस्ते दाम में मिलने लगती हैं। इनता ही नहीं, इस मौसम में लोग गाजर की सबज़ी से लेकर उसका जूस तक पीना पसंद करते हैं। यूं तो गाजर को कई तरह से खाया जाता है लेकिन क्या आप इससे मिलने वाले दोनों दोनों दोनों दोनों दोनों दोनों दोनों दोनों करना। दरअसल, इसमें बीटा?क्रोटीन और एंटी?ऑक्सीडेटर्स पाए जाते हैं। जो विभिन्न कोशिकाओं के मरम्मत करते हैं और एंजिंग के साइन्स को लंबे समय तक अनें से रोकते हैं। इनता ही नहीं, गाजर का सेवन रुख लच्छा, पिपल्स, पिगमेंटेशन आदि समस्या से भी बचता है।

होने वाले स्वास्थ्य लाभों के बारे में? गाजर में कई तरह के पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। खासतौर से इसमें बीटा केरोटीन, विटामिन ए, विटामिन सी, विटामिन बी 1, कई तरह के खनिज लवण व एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। गाजर का सेवन आंखों के लिए विशेष रूप से लाभदायी माना गया है। ऐसा इसमें पौजूद बीटा केरोटीन व विटामिन ए की वजह से होता है। इसलिए जो लोग गाजर का सेवन पर्याप्त मात्रा में करते हैं, उनकी आंखों की रोशनी लंबे समय तक दुरुस्त तो रहती है ही, साथ ही रोंधी व मोतियांविंद जैसी बीमारियां होने की आशंका भी कम हो जाती है। समय के पाछे को रोक पाना भले ही किसी के लिए संभव न हो लेकिन लंबे समय तक जवां बने रहने के लिए कुछ उपाय तो किए ही जा सकते हैं। इन्हीं में से एक है गाजर का सेवन दरअसल, इसमें कैरोटीनॉयड्स पाए जाते हैं जो किसी भी तरह के हृदय रोग की आशंका को कम करते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें बीटा केरोटीन के साथ-साथ अल्प कैरोटीन और ल्यूटीन भी पाया जाता है। गाजर का नियमित सेवन कालोस्ट्रॉल लेवल को भी नियंत्रित करने में मदद करता है। गाजर प्लैक और खाद्य काणों को मुंह से निकालकर दांत व पूरे मुहे की सफाई करने का काम करता है। ठीक उस तरह, जिस प्रकार एक टूथब्रश व टूथपेस्ट अपना काम करता है। गाजर में पाए जाने वाले मिनरल्स दांतों को किसी भी तरह की क्षति से बचाते बचते हैं। इसके अतिरिक्त गाजर मसूदा को उत्तेजित करके अधिक लार उत्पन्न करने में मदद करता है और यह लार क्षारीय होने के कारण कैविटी बनाने वाले बैक्टीरिया को संतुलित करके दांतों की रक्षा करता है।

**खूबसूरत बीच** में से एक है। हैवलॉक से इस बीच में जाने के लिए आप नाव रख फिर जंगल के रास्ते से जा सकते हैं। अब 30 मिनट की दूरी तय करनी पड़ेगी। यह

का प्लान बना रहे हैं तो अंडमान निकोबार आपके लिए सबसे अच्छी जगह है। यहां पर बहुत सारे बीच हैं जिसके बारे में आज हम आपको बताएंगे। अंडमान जाने के लिए अक्टूबर से मार्च तक का समय सबसे अच्छा माना जाता है। गर्मियों के उत्तम भरे मौस में यहां पर जाना ठीक नहीं रहेगा। यात्रा कष्टमयी हो सकती है। राधानगर बीच- हैवलॉक का राधानगर बीच अंडमान निकोबार के बेस्ट बीचेस में से एक है। यह एक मैगजीन द्वारा दुनिया के 7 वें बेस्ट बीच के रैंक में शामिल हो चुका है। यहां की रेत स्पार्क जैसी है जो सनसट में चमकती है। इसके अलावा यहां पर स्नोर्किंग, फिसिंग गेम, स्वीमिंग और स्कूबा डाइविंग आदि काफी फ्रेमस हैं। इसका आप खूब आनंद ले सकते हैं। एलीफेंट बीच- एलीफेंट बीच भी अंडमान और निकोबार ग्राहक तर पर शिष्ट है। यह १५० दूर समुद्र तट का पानी नेवी है। यहां पर आपका अलग तरह के समुद्री जीव और स्नॉर्किंग देखने को मिलेंगे। विजयनगर बीच- हैवलॉक का विजयनगर बीच भी काफी शानदार है। यहां पर आप पानी को हवा में उछलने वाले अच्छे नजारा देख सकते हैं। यह तैराकी नौकायन, फोटोग्राफी और वाटर सर्फिंग वेलिए यह बीच बहुत परफेक्ट माना जाता है। इस बीच में समुद्र के नीले पानी के किनारों पेड़ों की छाव का नजारा आप देख सकते हैं। यह जाह बहुत ही खूबसूरत है जो लोगों वाले अपनी तरफ खिंचता है। काला पथर बीच का नाम सुनने में थोड़ा अटपटा है लेकिन इसका नजारा बेहद खूबसूरत है हैवलॉक आईलैंड में आने वाले पर्यटक यहां पर खूब मस्ती करते हैं। आप बीच के किनारे हल्की धूप में चांदी रात तक बैठने वाले जगत के लिए जाएंगे।



४८

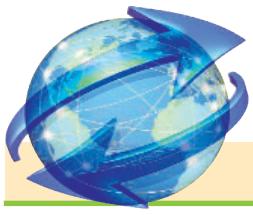
**हि** द्वू धर्म का एक विशेष पर्व माने जाने वाले मकर संक्रांति के अवसर पर लोग सिफ्पू जू-पाठ, स्नान या दान ही नहीं करते। बल्कि इस दिन तिल खाने और उसे दान करने का एक विशेष महत्व है। यूं तो इस दिन तिल के अतिरिक्त चावल, उड्ड की दाल, मूँगफली या गुड़ आदि का भी गेहूँ दिया जाता है। पांच दिन बाद एक अन्या नींह प्राप्त है। जोगा-

जाप का ना सेवन किया जाता है परन्तु ताल का एक जलता ही महत्व हा ताल  
अन्य कोई चीज़ खाएं या न खाएं, लेकिन तिल को किसी न किसी रूप में  
शामिल अवश्य करते हैं। मकर संक्रान्ति के दिन तिल की महत्वा का अंदाज़ा  
इस बात से लगाया जा सकता है कि इस पर्व को “तिल संक्रान्ति” के नाम से  
भी पुकारा जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि वास्तव में इस दिन तिल  
को इतना महत्व क्यों दिया जाता है। नहीं न, तो चलिए आज हम आपको इस  
बारे में बताते हैं? मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य देव मकर राशि में प्रवेश करते  
हैं, इधरलिए इस पर्व को मकर संक्रान्ति कहकर पुकारा जाता है और मकर के  
स्वामी शनि देव हैं। सूर्य और शनि देव भले ही पिटा?पुत्र हैं लेकिन फिर भी  
वे आपस में बैर भाव रखते हैं। ऐसे में जब सूर्य देव शनि के घर प्रवेश करते  
हैं तो तिल की उपस्थिति के कारण शनि उड़ें कि किसी प्रकार का कष्ट नहीं देते।  
जैसा कि हम सभी जानते हैं कि तिल शनि प्रिय वस्तु है। शनि व्यक्ति के पूर्व  
जन्म के पापों का प्रायश्चित्त करवाते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस दिन अगर  
तिल का दान व उसका सेवन किया जाए तो इससे शनि देव प्रसन्न होते हैं और  
उनका कुप्रभाव कम होता है। जो लोग इस दिन तिल का सेवन व दान करते  
हैं, उन्हाँना गुण व शक्ति दोष विलयना वेदान्त आपारी से दो जन्म है।









# राज्य में जन सहभागिता से स्वच्छता अभियान व्यापक स्तर पर चलाएँ : धामी

कैनविज टाइम्स संवाददाता



शहरों को स्वच्छता रैंकिंग में उत्तरारण्ड में प्रभावी कार्ययोजना बनाई जाए। मुख्यमंत्री आवास में मुख्यमंत्री पुकार सिंह धामी ने उच्च स्तरीय बैठक लेते हुए कहा कि स्वच्छता के लिए प्रभावी कार्ययोजना बनार्ह जाए। मुख्यमंत्री आवास में मुख्यमंत्री पुकार सिंह धामी ने उच्च स्तरीय बैठक लेते हुए कहा कि स्वच्छता के प्रति जारीकता के साथ ही इसके लिए जन सहभागिता भी सुनिश्चित की जाय। मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि देवभूमि उत्तरारण्ड में करोड़ों अरुड़ालू दर्शन करने के लिए आते हैं। यह सुनिश्चित किया जाय कि देवभूमि उत्तरारण्ड की स्वच्छता का संदर्भ देश-दुनिया तक जाए। शहरों के सौंदर्यकरण और इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट की दिशा में भी निरंतर कार्य किए जाये। उन्होंने कहा कि जन सहभागिता से ही जन

देहरादून। मुख्यमंत्री ने शनिवार को उच्च स्तरीय बैठक में अधिकारियों को राज्य में स्वच्छता अभियान व्यापक स्तर पर चलाने के निर्देश देते हुए कहा कि शहरों को स्वच्छता रैंकिंग में ऊपर लाने के लिए प्रभावी कार्ययोजना बनार्ह जाए। मुख्यमंत्री आवास में मुख्यमंत्री पुकार सिंह धामी ने उच्च स्तरीय बैठक लेते हुए कहा कि स्वच्छता के प्रति जारीकता के साथ ही इसके लिए जन सहभागिता भी सुनिश्चित की जाय। मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि देवभूमि उत्तरारण्ड में करोड़ों अरुड़ालू दर्शन करने के लिए आते हैं। यह सुनिश्चित किया जाय कि देवभूमि उत्तरारण्ड की स्वच्छता का संदर्भ देश-दुनिया तक जाए। शहरों के सौंदर्यकरण और इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट की दिशा में भी निरंतर कार्य किए जाये। उन्होंने कहा कि जन सहभागिता से ही जन

## सड़क की मांग: हल्ला बोल पदयात्रा पहुंची कुंजाऊ, लगे जिलाधिकारी व पौएमजीएसवाई के विरोध में नारे

कैनविज टाइम्स संवाददाता



गोपेश्वर। चमोली जिले के जोशीमठ बैठक के उर्घम घाटी के दुमक गांव को सड़क मार्ग से जोड़ने को लेकर ग्रामीण युवाओं की हल्ला बोल पदयात्रा शनिवार 13वें दिन कुंजाऊ पहुंच गई है। जहां पर ग्रामीणों के साथ ही पदयात्रियों ने जिलाधिकारी और पौएमजीएसवाई के अधिकारियों के विरोध में नरेवाजी कर शीर्ष सड़क निर्माण कार्य शुरू करने की मांग की है, बहीं दूसरी ओर दुमक गांव में 18वें दिन ग्रामीणों का धर्मान्न जारी है। गोरतलब है कि सींजीं लगा मैकोट-बैमर-डुमक मोर्ट मार्ग का निर्माण कार्य शुरू करने की मांग को लेकर विपक्ष 27 दिसंबर से दुमक गांव में धरना दिया जा रहा है, वहीं एक जनवरी से दुमक के बजाए मंदिर से हल्ला बोल पदयात्रा निकाली गई थी जो

कैनविज टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। बीएचईएल में मनाए गए सुरक्षा पखाड़ा तथा पर्यावरण माह के दौरान आयोजित की गई, विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित करने के लिए पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिविधि बीएचईएल हरिद्वार के कार्यपालक निदेशक प्रवीण चान्द ज्ञा और विशिष्ट अतिविधि कार्यपालक निदेशक (ओएसडी) टीएस मुरली थे। समारोह में प्रवीण चान्द ज्ञा ने कहा कि हमें अपने दैनिक जीवन में भी सुरक्षा नियमों को अपनाना होगा, तभी हम सुरक्षा की गयी विजय को लेकर विश्वास कर सकते हैं। इसमें ग्राम प्रधान कुंजाऊ दिलबर सिंह भंडारी, दर्शन सिंह भंडारी, बलवंत सिंह विष्णु, विश्वास के लिए अतिविधि और अतिविधि कार्यपालक निदेशक (ओएसडी) टीएस मुरली थे। समारोह में प्रवीण चान्द ज्ञा ने कहा कि हमें अपने दैनिक जीवन में भी सुरक्षा नियमों को अपनाना होगा, तभी हम एक सम्मानित जनवरी के अनुकूल क्रियालकाप करने की ओर विदेशी गांव को सम्मानित कर सकते हैं।



लास्टिक का प्रयोग न करने पर जोर दिया। समारोह में सुरक्षा पखाड़ा और पर्यावरण माह के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को स्मारण करने के लिए हमें प्लास्टिक प्रदूषण पर खेल लगाने के लिए, हमें प्लास्टिक के प्रयोगों को न्यूनतम स्तर पर लगाने का प्रयास करता होगा। टीएस मुरली ने भी सभी से पर्यावरण के अनुकूल क्रियालकाप करने की ओरींगों की दृष्टि से धूमधार कर रही है। यह उनकी उत्प्रेरित विश्वासीता है।

सीआईएक्सप्रीस की सुरक्षा एवं पर्यावरण सम्बंधित कार्यों की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर प्रभु श्रीराम (ओसीआरआई) मनीष सचन के पर्यावरण अतिविधि और विशिष्ट अतिविधि ने पुस्तक संस्करण की दिशा में किए गए प्रयासों से सभी को अवश्य करता रहा। साथ ही सुरक्षा अधिकारी सुधीर कुमार सिंह तथा सुनील कुमार साहू, ने, क्रमशः हीप तथा



जागृत करने का काम किया है। राम मंदिर के निर्माण से सशक्त राष्ट्र का निर्माण होने वाला है। राम मंदिर के निर्माण से भारत में रामायन आयोजन पर सहमति प्रदान की। स्वामी अवधेशनांद गिरि महाराज को विश्व हिन्दू परिषद उत्तरारण्ड के प्रांत संगठन मंत्री अजय कुमार ने दिया। अवधेशनांद गिरि महाराज ने प्राण प्रतिष्ठा पत्र पर लेने वालों के लिए उपयोगी पुस्तकों की व्यवस्था की जाये। उन्होंने कहा कि खेल युवाओं को नशा मुक्त अभियान से जोड़ने के लिए उत्तरारण्ड का जेहांगर देश-दुनिया में हो रही है। यह वास्तव में भारत की सुपर आत्मा है। यही भारत को दुनिया के अंदर सर्वाधिकतावाली बनायेगी। भारत के जागरण की बहुत आवश्यकता है। अपने निजी स्वामी ओडिकर देश और धर्म के लिए जीवों के लिए जरूरत है। हम सब एक हैं। इस भाव के साथ भारत का निर्माण होने का दृष्टिकोण है।

## संक्षिप्त समाचार

### सोनिया बस्ती में आप ने लगाया मोहल्ला रिपेयर कैप

हरिद्वार। आप आदमी पाटी ने सोनिया बस्ती में 12 वां निःशुल्क मोहल्ला रिपेयर कैप लगाकर लोगों की समरयाएं सुनी। इस अवसर पर पूर्व जिला अध्यक्ष इंजीनियर संजय सैनी ने कहा कि आप आदमी पाटी के मोहल्ला रिपेयर कैप को लेकर लोगों में काफ़ी उत्साह है। अब तक लगाए गए कार्यों के लिए नरेवाजी कर शीर्ष सड़क निर्माण कार्य शुरू करने की मांग की है, वहीं दूसरी ओर दुमक गांव में 18वें दिन ग्रामीणों का धर्मान्न जारी है। गोरतलब है कि सींजीं लगा मैकोट-बैमर-डुमक मोर्ट मार्ग का निर्माण कार्य अध्यक्ष छोड़ा गया है। साथ ही ही सड़क का समरयण परिवर्तन कर दुमक गांव को लिए लागत कार्यों को लेकर जिला अध्यक्ष आप विधायिका और अतिविधि कार्यपालक निदेशक (ओसीआरआई) टीएस मुरली थे। समारोह में प्रवीण चान्द ज्ञा ने कहा कि हमें अपने दैनिक जीवन में भी सुरक्षा नियमों को अपनाना होगा, तभी हम सुरक्षा की गयी विजय को लेकर विश्वास कर सकते हैं।

## उद्योग व्यापार प्रतिनिधिमंडल संघर्ष समिति व्यापारी उत्पीड़न के विरोध में

कैनविज टाइम्स संवाददाता

ऋषिकेश। उद्योग व्यापार प्रतिनिधिमंडल संघर्ष समिति की बैठक धर्मसाला एवं डिस्ट्रों के द्वारा व्यापारी उत्पीड़न के विधायक में आयोजित करने के लिए पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिविधि बीएचईएल हरिद्वार के कार्यपालक निदेशक प्रवीण चान्द ज्ञा और विशिष्ट अतिविधि कार्यपालक निदेशक (ओसीआरआई) टीएस मुरली थे। समारोह में प्रवीण चान्द ज्ञा ने कहा कि हमें अपने दैनिक जीवन में भी सुरक्षा नियमों को अपनाना होगा, तभी हम एक सम्मानित जनवरी के अनुकूल क्रियालकाप कर सकते हैं।

### 16 जनवरी को क्षेत्र रोड बाजार में व्यापारी उत्पीड़न के विरुद्ध प्रदर्शन के बाद देंगे धरना

लिए मजबूर है। समिति के सभी सदस्यों के द्वारा अत्यक्ष को हर तरह के आंदोलन तथा आयोजित की गई है। यह उनकी हठधर्षिता को नहीं छोड़ते हैं तो संघर्ष समिति नगर के समस्त व्यापारियों के साथ बड़े से बड़े आंदोलन के लिए भी संकल्प लेती है। बैठक में जिला महामंत्री दीपक कुमार तथा नरेवाजी की दृष्टि से अधिकारी और अतिविधि अधिकारी, सीआईएसएस अमरदीप ने कहा कि मोहल्ला रिपेयर कैप की लोगों को प्रधानित कर रही है। यह उनकी उत्पीड़न की टीम ने बहावी बाही की दृष्टि से अधिकारी और अतिविधि अधिकारी को लेकर विशेष धरना करता रहा। यह उनकी उत्पीड़न की टीम ने बहावी बाही की दृष्टि से अधिकारी और अतिविधि अधिकारी को लेकर विशेष धरना करता रहा।

फरार चल रहे 10 हजार के इनामी को पुलिस ने किया

गिरफतार

व्यापारी उत्पीड़न के विशुद्ध धरना प्रदर्शन दिया जाएगा। संघर्षित पक्षों को सांकेतिक रूप से व्यापारी हिंसा के लिए विशुद्ध कार्य न करने की हिंसा कर दी जाएगी। यदि इसके बावजूद भी यह अपनी हठधर्षिता को नहीं छोड़ते हैं तो संघर्ष समिति नगर के समस्त व्यापारियों के साथ बड़े से बड़े आंदोलन के लिए भी संकल्प लेती है। बैठक में जिला महामंत्री दीपक कुमार तथा नरेवाजी की दृष्टि से अधिकारी और अतिविधि अधिकारी को लेकर विशेष धरना करता रहा। यह उनकी उत्पीड़न की टीम ने बहावी बाही की दृष्टि से अध